विचार बिन्दु

संसार के दुःखियों में पहला दुःखी निर्धन है। उससे दुःखी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनों से अधिक दुःखी वह है, जो सदा रोगी रहता हो और सबसे दुःखी वह है, जिसकी पत्नी दुष्टा हो। –विदुरनीति

प्लेसमैंट और पैकेज की समस्या से जूझते आज के युवा

युवाओं के लिए रोजगार के अवसर केवल एक देश की समस्या ना होकर अब वैश्विक समस्या होती जा रही है। रोजगार को लेकर अब तो यह भी बेमानी हो गया है कि आपने कहां से अध्ययन किया है। हालात यह होते जा रहे हैं कि दुनिया के श्रेष्ठतक अध्ययन केन्द्रों के पासआउट युवा भी अच्छे पैकेज के रोजगार के लिए दो-चार हो रहे हैं। यह कल्पना या कपोल कल्पित नहीं बल्कि वास्तविकता है कि हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, शिकागो, कोलंबिया, एमआईटी, पेन्सिलवेनिया, एमआईटी जैसे वैश्विक ख्यातनाम संस्थानों से एमबीए करें युवाओं को पासआउट के तीन माह बाद तक ऑफर नहीं मिलने की संख्या में तेजी से इजाफा होता जा रहा है। ब्लूमबर्ग ने अमेरिका के सात शीर्ष संस्थानों से एमबीए का अध्ययन कर निकले विद्यार्थियों के प्लेसमेंट को लेकर अध्ययन कर रिपोर्ट में तो यही खुलासा किया है। चौकाने वाली बात यह है कि 2021 की तुलना में 2024 में यह प्रतिशत करीब-करीब चार गुणा बढ़ गया है। 2021 में केवल 4 प्रतिशत पासआउट छात्र ही ऐसे थे जिन्हें पासआउट के तीन माह बाद तक ऑफर नहीं मिलता था वह संख्या 2024 तक बढ़कर 15 प्रतिशत हो गई है। अमेरिका के शीर्ष सात संस्थानों में कहीं-कहीं तो छह गुणा तक की बढ़ोतरी देखी गई है। यह इसलिए भी चिंताजनक है कि जिन संस्थानों के अध्ययन का स्टेण्डर्ड निर्विवाद समूचे विश्व में श्रेष्ठतम रहा है और जिनकी वैश्विक पहचान है उनकी ही यह हालत है तो आम संस्थानों की क्या होगी? यह अकल्पनीय है। हो सकता है कि ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट अतिशयोक्तिपूर्ण हो पर हालात जिस तरह के सामने आ रहे हैं उससे यह साफ हो जाता है कि प्लेसमेंट की समस्या दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है।

सवाल केवल प्लेसमेंट तक ही सीमित नहीं हैं अपितु पैकेज में भी लगातार कमी देखी जा रही है। कुछ चंद युवाओं को अच्छा पैकेज मिल जाना इस बात का प्रमाण नहीं हो सकता कि कंपनियों द्वारा युवाओं को अच्छा पैकेज दिया जा रहा है। दरअसल कोरोना के बाद से प्लेसमेंट और पैकेज को लेकर हालात बहुत हद तक बदल गए हैं। यदि हम भारत की ही बात करें तो देश के शीर्ष प्रबध संस्थानों से पासआउट युवाओं को 2022 में औसत 29 लाख का पैकेज मिल रहा था तो वह 2024 आते आते 27 लाख पर आ गया है। यह सबतो देश दुनिया के शीर्ष अध्ययन संस्थानों से पासआउट युवाओं को लेकर है। सामान्य व मध्यस्तरीय संस्थानों से पासआउट युवाओं को मिलने वाला पैकेज तो बहुत ही कम होता जा रहा है। दूसरी और घर-बार छोड़कर 90 घंटे तक काम करने को लेकर बहस चल रही है। एक और पिकोक कल्चर, हाईब्रीड सिस्टम और वर्क फ्राम होम से कार्यस्थल पर युवाओं को लाने की जद्दोजहद जारी है तो दूसरी और कम होते अवसर चिंता का विषय बनते जा रहे हैं।

सौ टके का सवाल यह है कि अध्ययन संस्थान खोलने की अनुमति के साथ ही अध्ययन का स्तर भी बनाये रखने के लिए फेकेल्टी को लेकर भी मान्यता देते समय सरकार को गंभीर होना होगा। जब तक स्तरीय अध्ययन उपलब्ध नहीं होगा तब तक हम पास आउट तो करते रहेंगे पर प्लेसमेंट या अच्छे पैकेज की बात करना बेमानी होगा।

सरकारें लाख प्रयास करें या विपक्षी बेरोजगारी बढ़ने के लाख आरोप प्रत्यारोप लगाये पर लगता है कि प्लेसमेंट, रोजगार और पैकेज का संकट किसी एक देश का नहीं अपितु वैश्विक समस्या बनती जा रही है। इससे युवाओं में कहीं ना कहीं निराशा भी आती जा रही है। हांलाकि हार्वर्ड, शिकागो आदि के संदर्भ शिक्षा के स्तर को लेकर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता पर तस्वीर का दूसरा पक्ष यह भी है कि हार्वर्ड, शिकागो या इस तरह की उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाओं में अध्ययन करने वाले कितने युवा होते हैं तो दूसरी और कितने लोगों के लिए इन संस्थाओं के अध्ययन का खर्च उठाने की क्षमता होती है। जब इस तरह की उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाओं से अध्ययन प्राप्त कर निकले युवाओं के सामने ही प्लेसमेंट या पैकेज का संकट आ रहा है तो अन्य संस्थानों से अध्ययन प्राप्त युवाओं की स्थिति क्या होगी यह अपने आपमें शोचनीय हो जाती है।

जहां तक हमारे देश की बात की जाए तो यह साफ हो जाता है कि हमारे यहां एक तरह से अंधी दौड़ चलती है। एक समय था जब कुकुरमुत्ते की तरह प्रबंधन संस्थान खुले और आज हालात यह है कि निजी क्षेत्र में खुले इस तरह के संस्थानों को क्षमता के अनुसार विद्यार्थी ही नहीं मिल रहे हैं। लगभग यही स्थिति इंजीनियरिंग कॉलेजों की होती जा रही है। गली-गली में फार्मेसी संस्थान खुलते जा रहे हैं। सौ टके का सवाल यह है कि अध्ययन संस्थान खोलने की अनुमति के साथ ही अध्ययन का स्तर भी बनाये रखने के लिए फेकेल्टी को लेकर भी मान्यता देते समय सरकार को गंभीर होना होगा। जब तक स्तरीय अध्ययन उपलब्ध नहीं होगा तब तक हम पास आउट तो करते रहेंगे पर प्लेसमेंट या अच्छे पैकेज की बात करना बेमानी होगा। सरकार को शिकागो, हार्वर्ड कोलंबिया, पेन्सिलवेनिया या इसी तरह की संस्थानों से पासआउट के साथ जो हालात बन रहे हैं उससे समय रहते सबक लेना होगा और अन्य संस्थानों में भी शिक्षण और शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करनी होगी ताकि पासआउट की लंबी फोज नहीं बन सके। युवाओं में नैराश्य भी नहीं आये और देश को योग्य युवा मिल सके।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

ज़िंदगी की खोज

मन का दीया लेकर ज़िंदगी ढूँढता हूँ। जिस मोड़ पर हूँ, जिस पथ या पगडंडी पर हूँ, उजली किरण-सी क्षणभर को मिल जाए ज़िंदगी, यह चाह रहती। इतनी अधिक भी उजली नहीं कि वह धूप और आतप-सी लगने लगे, इतनी कम भी नहीं कि तिमिर के साम्राज्य में समा जाए। मिलती है कई बार वह, क्योंकि मेरे पग उसी को लक्षित होते हैं, मेरा मन उसी का आकांक्षी रहता है।

ज़िंदगी वहाँ है जहाँ भोर की बेला में भ्रमण के समय झाड़ पर चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दे। राधा-राधा के मेरे उचार में खलल पड़े, इसकी इजाज़त मैं सिर्फ़ पेड़-परिंदों को दे सकता हूँ। किसी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं। हाँ, कोई अपनी सुविधा के लिए अवांछित अवरोध उत्पन्न कर दे, यह अलग बात है। अब धीरे-धीरे स्वभाव में समा रहा है कि किसी अन्य के प्रपंच को बाहर से विदा कर दूँ, मन में घर न करने दूँ। तो ज़िंदगी की खोज पूरे समय चलती, सतत-अनवरत-निर्बाध। वो जो एक पुष्प रोज़ तोड़ लेता था प्रातः भ्रमण के समय, ताकि अर्चन अर्पण से सूरज भगवान को प्रसन्न कर सकूँ, खटका था मुझे यह कृत्य। अब यह न करता, पुष्प डाल पर मुस्कुराता, मेरे प्राण और रसवन्त हो उठते, मेरी आत्मा और उज्ज्वलता धारण कर लेती। हवा के साथ हिलती सुवासित पुष्प युक्त डाल तो प्रकृति का नृत्य है, कितनी भंगिमाओं के भंग का दायी बना मैं तब तक, अपने कृत्य से ! ताप अब तक विद्यमान उसका अंतस् में, पश्चाताप प्रत्येक पाप का हल न होता। जैसे एक शाप को ढोया मैंने।

अवकाश की सुबह उद्यान मेरी दिनचर्या में शामिल। यह भी ज़िंदगी की तलाश का प्रकल्प ही। पंचवटी, खेजड़ी, बोरड़ी, अमलतास सबसे प्रेमयुक्त संबंध। नीम के गले लगने की क्रिया अब गले उतरने लगी है , मैं पेड़ के स्वभाव को पाता हूँ इससे। उससे बात होती। कान ही नहीं, माथा और हृदय भी हथेली पर रखकर उसके साथ रख लेता । उसकी साधुता पाऊँ, न पाऊँ पर कुछ तरलता उसकी मिल जाएगी, मेरी प्रकृति को किंचित सजीवत बनाएगी ही। अनगिनत उपेक्षित कोनों में गया, अनुराग को जीया। पुराना कूप, ठूँठ हुआ वृक्ष, काँटों वाली बोरड़ी, बुजुर्ग गार्ड साहब, सफाईकर्मी माता जी, सबके पास गया। उन्हें कुछ देने नहीं। लेने, कुछ ज़िन्दगी की रोशनी मिले, तो अपने पथ को कुछ और आलोकित कर सकूँ। उपेक्षित से अनुराग अब उद्यान तक सीमित न रहा, वह सब जगह काम आता। स्वभाव का एक अंग बन गया, मानो सम्पूर्ण संसार मेरे संग हो लिया।

पेड़ की हरी उजली पत्तियों में मेरा आकर्षण है । पर सूख कर पगडंडी पर बिछ गईं पत्तियों तो मेरे असीम आकर्षण की कारक हैं । पग धरो और मर्मर-सा संगीत बजे । उस उत्सर्ग का क्या बखान किया जाए । न्यौछावर हूँ मैं मृत सूखे पत्तों के जीवंत संगीत पर । पर उस संगीत को आह में नहीं बदलना चाहता मैं, इसलिए अत्यंत हौले से पग धरता उस पगडंडी पर । कुचलने की बात दूर, ऐसे शब्दों की प्रयुक्ति से भी दूर रहना भाता है? घर ले आया था, कई दिन तक मेरे साथ रहा था वह ?

अच्छा, मुझे पत्तियों का सर्वांग इतना भी नहीं सुहाता। मैं तो घने जंगल के बीच में खड़े पेड़ की अंतिम पत्ती का परस चाहता हूँ, उसका रस चाहता हूँ। नदियाँ ठीक हैं कलकल करतीं, पर उन गरों की चाह मेरी, जहाँ से ये विदा होती होंगी। विराट धोरों पर पग मांडता हूँ, आख़िरी रजकण की इच्छा भी तो जानना चाहता हूँ। कभी लिखा था ना, धोरे पुराकाल के प्रेमी हैं, जो मिल नहीं पाए; रजरूप धारण कर धोरे बन गए ; हवा आती है तो रजकण उड़कर मिलते हैं एक दूजे से, प्रेमियों की तरह ! आस ऐसे भी तो पूर्ण होती है कभी और मैं उनकी आस में सुवास भर देना चाहता हूँ। रजकणों पर, धोरों पर कोई घन बरसता, तब उठने वाली सौंधी महक उस प्रेम के प्रसंगों की याद दिलाती।

बच्चे मिले तो उनकी काया में प्रवेश कर बचपन जीने लगता हूँ, बुजुर्ग से मिलकर अनुभव की आँच को साँस में भरता हूँ। कोई खिलौना, गुंद की गोली या मित्र के खेत पर खाट पर बैठ भोजन, हज़ार तरह से ज़िंदगी लौटती है। जो करना चाहे उसे हासिल तो दुर्लभ भी नहीं। सवेरे उठूँ और इठलाते वृक्ष की बांकी डाल पर पंछी को गाते पाऊँ, चाह की यह राह पूर्ण होगी कभी तो !

तो, मैं ज़िंदगी ऐसे ही ढूँढता हूँ। पर यह प्रकृति विचरण तो नियतकालिक, अन्यथा तो राजकाज है, सरकारी सेवा है। उसमें भी ज़िंदगी की खोज अनवरत रहती। काम हो समय पर, गुणवत्ता रहे काम में, तमाम व्यस्तता के बाद भी मुस्कान कम न हो। जो मिले, काम के साथ स्वभाव, व्यवहार और मुस्कान याद रखें। जीवन तो एक वर्तुल है, बार-बार मिलना होता परस्पर। तो कभी मिलना हो तो प्रेम के कलश रीते न मिलें। दृष्टि और दृष्टिकोण में किसी के प्रति कोई बैर न पले, अनचाहे लोग भी द्वेष की पात्रता में न ढलें। मौन, अनुशासन, एकांत और मुस्कान मेरे साथी हैं, वे मेरी इन इच्छाओं को पूर्ण करने में सहायता करते हैं। समय के साथ यह जाना कि असल ज़िंदगी अंदर है। बाहर तो प्रपंच है, प्रमाद है, प्रलाप है। जीवन नैमत है, यह अभिशाप न बने। किसी विखंडन के दायी न बनें हम, सृजन कर सकें या नहीं, कोई बात नहीं। सहज उन्मुक्त है प्रकृति, अनुशासन के साथ। इसमें अवरोध की कोशिश जीवन को विकृत करेगी, कर रही है। संगीत बने ज़िंदगी, नृत्य बने, सुंदर सी कविता या गीत बने, मोहक चित्र बने....बस यह साध बनी रहे।

–दशरथ कुमार सोलंकी,
निदेशक वित्त, जोधपुर
विकास प्राधिकरण, जोधपुर

भीलवाड़ा शहर में शीतला सप्तमी पर मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) निकाली

भीलवाड़ा, (निसं)। शीतला सप्तमी पर मेवाड़ में होली खेलने की परम्परा रही है। भीलवाड़ा शहर सहित जिलेभर के कई इलाकों में शुक्रवार को बड़ी धूमधाम के साथ शीतला सप्तमी का पर्व मनाया गया। वहीं भीलवाड़ा शहर की परंपराओं के अनुसार मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) भी निकाली गई। चित्तौड़वाले की हवेली के पास से मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) निकली गई। इसमें जिंदा युवक की अर्थी सजाकर बाजार में घुमाया गया और युवक गुलाल उडाते हुए चलते रहे। कुछ युवक अर्थी पर लेटे युवक पर वार करते रहे। इसके चलते वह अर्थी से कूदकर भागने का प्रयास करता तो फिर से उसे सुला दिया जाता। रंग और गुलालों के बीच परम्परानुसार शहर भर में शीतला सप्तमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। कांग्रेस कार्यालय में पूर्व मंत्री धीरज गुर्जर के नेतृत्व में गैर नृत्य का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में शहरवासियों ने हिस्सा लिया।

- **परम्परा के अनुसार सवारी में एक जिंदा युवक की अर्थी सजाकर बाजार में घुमाया गया और पिछे से युवक गुलाल उड़ाते हुए चलते रहे**
- **कुछ युवक अर्थी पर लेटे युवक पर वार करते रहे, इसके चलते वह अर्थी से कूदकर भागने का प्रयास करता तो फिर से उसे सुला दिया जाता है**

भीलवाड़ा में मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) निकली गई, इसमें युवक गुलाल उड़ाते हुए चलते रहे।

जानकारी के अनुसार मेवाड़ में होली का रंग पूरे 15 दिन चलता है। अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग दिन होली खेली जाती है। जहाजपुर कस्बे में पंचमी को रंग खेला जाता है। भीलवाड़ा, शाहपुरा, गुलाबपुरा व मांडलगढ़ व क्षेत्रों में शीतला सप्तमी व कहीं अष्टमी को रंग व गुलाल खेला जाता है। मांडल में तेरस को होली खेलते हैं। साथ ही बादशाह की सवारी निकालते हैं व नाहर नृत्य का आयोजन किया जाता है। शहर में दोपहर दो बजे वहीं रंगोत्सव को देखते पुलिस ने पुख्ता बंदोबस्त किए। होली में खलल नहीं पड़े, इसके लिए पर्याप्त जाप्ता तैनात किया गया। 800 से ज़्यादा पुलिसकर्मी सुरक्षा व्यवस्था में लगाए गए। इसके अलावा आरएसी की तीन कम्पनी और ढाई सौ होमगार्ड भी सुरक्षा में पुलिस के साथ लगाये गये। साथ ही हुड़दंगियों से सख्ती के साथ निपटने के लिए वीडियो और ड्रोन कैमरे से भी नजर रखी गई। शहरवासियों ने जमकर त्योहार का आनंद लिया।

एसपी धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि संवेदनशील और अतिसंवेदनशील इलाकों में खास नजर रहीं। सुबह आठ से शाम पांच बजे तक जाप्ता तैनात किया गया। थानों की चेतक और मोबाइल टीम भी लगातार गश्त करती रही। शहर में 75 प्रमुख चौराहे और मोहल्लों को चिहिन्त किया गया, जहां जाप्ता तैनात रहा। पुलिस अधिकारी लगातार अपने-अपने इलाके में गश्त करते रहे। शराब पीकर वाहन चलाने, हुड़दंग करने वाले, राहगीरों पर गुलाल फेंकने वालों से सख्ती से निपटा गया। किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पुलिस नियंत्रण कक्ष में रिर्जव में भी जाप्ता तैनात किया गया था। इसके अलावा घुड़सवार भी कंट्रोल रूम के बाहर तैनात रहे। शहर में सुरक्षा बंदोबस्त में आसपास के थानों से भी प्रभारियों को जाप्ते के साथ बुलाया गया था।

शीतला माता मेले में उमड़े लोग, गैरों ने प्रदर्शन किया

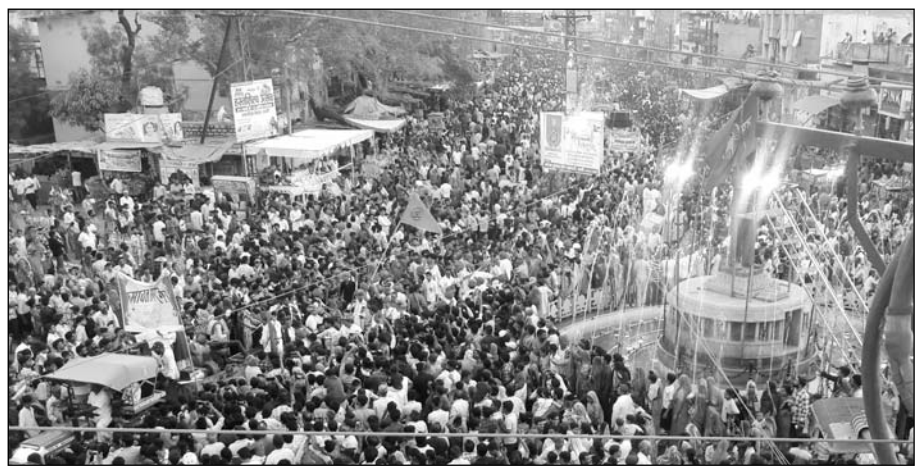

पाली का प्रसिद्ध शीतला माता मेला धूमधाम से आयोजित हुआ।

पाली, (नि.सं.)। पाली का प्रसिद्ध शीतला माता मेला शुक्रवार को धूमधाम से आयोजित हुआ।

नगर निगम और प्रशासन की ओर से आयोजित सूरजपोल चौराहे से मंदिर तक बैरिकेटिंग लगाकर सुरक्षा व्यवस्था की गई। शाम पांच बजे से विभिन्न समाजों की गैरों को आना शुरू हुआ। सूरजपोल से अंबेडकर सर्किल तक पैर रखने की जगह नहीं थी। सड़क के दोनों और महिला और बच्चे बैठे हुए थे। इन गैरों में अंजना पटेल समाज, कुमावत समाज पंचम नगर, सीरवी समाज सूरजपाल, घांची समाज सूरजपाल, सरगरा समाज मेघवाल समाज, घांछियों का बड़ा बास, भलावतों का वास, रामदेव रोड कुमावत समाज, प्रजापत समाज, प्रवासी गाछी समाज, मेवाड़ा समाज माली समाज सहित करीब 25 गैरों ने भाग लिया, जिसमें रंग बिरंगी पोशाकें, महिला महाराज पंडित, मिकी माउस सहित कई रूप धरे डीजे की धुन पर नृत्य नाच रहे थे। एक-एक करके सभी गैर मंच के सामने पहुंचे, कई गैरों में ट्रैक्टर पर महिला पुरुष बनकर नाच रहे थे। एक गैर में योगी जी की झांकी थी। मंच के सामने प्रदर्शन करते हुए निकले जिनको नगर निगम की ओर से झंडा व गुड़ की भेली प्रदान की गई। मंच पर नगर परिषद आयुक्त नवीन भारद्वाज, अतिरिक्त जिला कलेक्टर बजरंग सिंह, नगर परिषद के लोकेश जैन, जितेंद्र सोनी, विधायक भीमराज भाटी, भाजपा जिला अध्यक्ष सुनील भंडारी, पूर्व सभापति महेंद्र बोहरा सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। चार घंटे के मेले में हजारों शहरवासी उमड पड़े।

खाद्य सुरक्षा टीम ने 150 किलो इमरती नष्ट कराई

खाद्य सुरक्षा टीम ने मोमोज के ठेले पर तेल की जांच की।

गंगापुर सिटी, (निसं)। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने शुक्रवार को कई दुकानों का निरीक्षण किया। टीम ने 150 किलो इमरती को नष्ट करवाया और मिलावट की जांच के लिए नमूने लिए। वहीं, टीम के आने की जानकारी मिलते ही कई दुकानदार अपनी दुकानें बंद कर फरार हो गए।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी वेदप्रकाश पूर्विया और नितेश गौतम के नेतृत्व में टीम ने कचहरी रोड और माल गोदाम रोड का निरीक्षण किया। मोनू चाट सेंटर, गोपाल माली हलवाई और विजय चाट सेंटर की जांच में मिठाइयों में अधिक मात्रा में रंग पाया गया। टीम ने 150 किलो इमरती को नष्ट करवाया और मिलावट की जांच के लिए नमूने लिए। माल गोदाम के पास मोमोज के दो ठेलों की जांच की गई। एक ठेले पर खाने की गुणवत्ता सही मिली। दूसरे ठेले पर तेल में पीपीसी का स्तर अधिक होने के कारण खराब तेल को मौके पर ही नाले में डलवाकर नष्ट करवाया गया। टीम ने दुकानदारों को निर्देश दिया कि तेल दो दिन से अधिक पुराना नहीं होना चाहिए। श्री दाऊजी स्वीट्स पर लाइसेंस की जांच की गई और मिल्क केक का नमूना लिया गया।

अधिकारियों ने बताया कि सभी नमूनों को जांच के लिए भेजा जाएगा। उन्होंने दुकानदारों को मिलावट से बचने और खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता बनाए रखने की चेतावनी दी। कार्रवाई के दौरान टीम ने कैंप लगाकर लगभग 15 नए खाद्य लाइसेंस भी जारी किए। अधिकारियों ने कहा कि मिलावटखोरों के खिलाफ कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

खेत पर पानी देने गये किसान पर पैंथर ने हमला किया, अस्पताल में भर्ती कराया

पैंथर के हमले से किसान के हाथ, पेट व गर्दन पर चोटें आई

बौंली-बामनवास, (निसं)। सवाई माधोपुर जिला मुख्यालय के घाटीला बालाजी पुरानी शहर सवाई माधोपुर हनुमान जी की डूंगरी के पास खेत पर पानी देने गए किसान रतनलाल सैनी पर एक पैंथर ने बछड़ी का शिकार करते समय नजदीक आ जाने के कारण हमला कर दिया। हमले से किसान के हाथ, पेट व गर्दन पर चोटे आई है, किसान को घायल अवस्था में सवाई माधोपुर जिला चिकित्सालय ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने किसान की हालत खतरे से बाहर बताई है।

- **पैंथर ने बछड़ी का शिकार करते समय नजदीक आ जाने के कारण किसान पर हमला कर दिया था**

प्राप्त जानकारी के अनुसार किसान रतनलाल सैनी शुक्रवार को प्रातः करीब नौ बजे हनुमान जी की डूंगरी के पास खेत पर पानी देने गया था। इसी दौरान पैंथर ने हमला कर दिया। वहां मौजूद किसानों ने शोर मचाकर पैंथर को भगाया। राजबाग नाका के वनपाल महेंद्र सिंह राजावत ने बताया कि खेत पर एक बछड़ी बंधी हुई थी, जिसका पैंथर ने शिकार किया था, पैंथर अपने शिकार को खाने के लिए वहां मौजूद था इसी दौरान किसान वहां आ गया। वन विभाग के आरओपीटी रेंजर अश्वनी प्रताप सिंह के अनुसार इस इलाके में पैंथर का मूवमेंट है।

राशिफल शनिवार 22 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र रात्रि 3:34 तक, व्यतिपात योग सायं 6:31 तक, बालव करण सायं 4:54 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कालाष्टमी, रिषभ देव जयन्ती, व्यतिपात पुण्य है। आज से वर्षीतप आरम्भ होगा। आज से राष्टीय चैत्र मास शाक 1947 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:03 से 9:33 तक, चर 12:34 से 2:04 तक, लाभ-अमृत 2:04 से 5:05 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 6:35

मेष
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार होगा। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।